Impact Factor – 6.625 **E-ISSN – 2348-7143**

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFEREED & INDEXED JOURNAL

April-2021

Special Issue 265

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : **www.researchjourney.net**

***Cover Photo (Source) : Internet – NASA's Perseverance Rover successfully touched down on Mars on Thursday, 18th February 2021.**

© All rights reserved with the authors & publisher **Price : Rs. 1000/-**

25	A Comparative Study of Sports Emotional Intelligence Between Rural & Urban Female Wrestling Players of Nashik	**Dr. Manish Deore**	135
	हिंदी विभाग		
26	आदिवासी समाज का अस्तित्व	**अप्पासाहेब जगदाले**	138
27	संत कबीरदास के काव्य में युग चेतना	**प्रा.हिरा पोटकुले**	141
28	कबीर वाङ्मय और उसकी प्रामाणिकता	**डॉ. महेन्द्रसिंह पवार**	145
29	विद्यापति का साहित्य 'विभागसार' - स्त्रीधनाधिकार और उपयोग - वर्तमान परिप्रेक्ष्य में।	**डॉ. प्रियंका कुमारी**	149
30	अमृता प्रीतम के अनुदित उपन्यासो मे प्रेम का स्वरूप	**डॉ. शोभा रावत**	156
31	स्त्री जीवन और सुधा ओम ढींगरा की कहानिया	**अनिता देवी**	167
32	विश्व पटल पर हिंदी की स्थिति और प्रासंगिकता	**डॉ. विष्णू राठोड**	171
33	हिंदी काव्य साहित्य मे व्यष्टी - समष्टी : बोध, अर्थ एवं स्वरूप	**डॉ. जगदीश परदेशी**	176
34	मंदिर के बदले सेवाश्रम बनाने का संदेश देती कहानी - 'फाइल'	**डॉ. गजानन भोसले**	181
35	थारु जनजाति का आर्थिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन	**डॉ. विमला देवी**	187
36	फादर पीटर पॉल एक्का के कहानी साहित्य मे आदिवासी चेतना : 'राजकुमारों के देश में' इस कहानी संग्रह के विशेष संदर्भ में	**प्रा. हर्षल बच्छाव, डॉ. अनीता नेरे**	196
37	हिन्दी ग़ज़ल में फ़िक्र और ज़िक्र	**डॉ. जियाउर रहमान जाफरी**	201
38	वैद्यकीय आचारसंहिता : एक तात्विक चिंतन	**डॉ.राजेसाहेब मारडकर**	205
	मराठी विभाग		
39	आदिवासींच्या विकासाकरिता महाराष्ट्र शासनाच्या विविध योजना : उद्देश व स्वरुप	**डॉ. चंद्रकांत गोंधळी**	211
40	वारकरी साहित्यातील अंधश्रद्धा निर्मूलन विषयक विचार	**श्री. जालिंदर येवले**	217
41	संत नामदेवांची समाजाभिमुखता	**प्रा. डी. एम. बडूरे**	222
42	चोखियाची महारी : संत सोयराबाई	**डॉ. प्रमोद गारोडे**	225
43	किशोर सानप लिखित 'समग्र तुकाराम दर्शन' : एक साक्षेपी स्वरुपाची मांडणी	**प्रा. बालासाहेब कटारे**	231
44	वाकाटक कालीन चित्रकला	**डॉ. जी. एस.पाटील**	234
45	राग यमन व चित्रपट गीत – संगीत	**डॉ. सरिता इंगळे**	241
46	मानवतेचा संदेश देणारे 'प्रकाशवाटा'	**सुनिल खैरनार, डॉ. उज्ज्वला देवरे**	245
47	समकालीन ग्रामीण कादंबरीतील समाजदर्शन	**डॉ. शारदा मोरे**	248
48	विसाव्या शतकातील आदिवासी साहित्य	**डॉ. अंजली मस्करेन्हस**	253
49	'कापुसकाळ' या कादंबरीतील शेतकऱ्यांच्या समस्या	**डॉ. किशोर पाठक**	259
50	मराठी ग्रामीण कथांचा अभ्यास (१९२५ ते १९५० चा कालखंड)	**विनोद भालेराव, डॉ.अक्षय घोरपडे**	262
51	नव्वदोत्तर स्त्रियांच्या मराठी कवितेतील स्त्रीवादी विचार	**डॉ. संजय पाटील**	266
52	साहित्य अकादमी पुरस्कृत कवितासंग्रहाची वाङ्मयीन आणि भाषिक वैशिष्ट्ये	**प्रा.भारती सोनवणे**	275
53	मनाने व मनगटाने घट्ट कसं व्हावं? हा संदेश देणारे आत्मचरित्र 'झेप' : एक आकलन	**डॉ. भाऊसाहेब गमे**	283
54	महाराष्ट्रातील परिवर्तनवादी चळवळी आणि महात्मा फुले	**डॉ. मारोती घुगे**	289
55	लोकमान्य टिळक यांचे चतु:सूत्री आंदोलन : एक राष्ट्र बांधणीचा मार्ग	**डॉ. राजू सावंत**	297

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019),
Special Issue - 265 : Multidisciplinary Issue
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
April- 2021

संत कबीर दास के काव्य में युग चेतना

प्रा.हिरा तुकाराम पोटकुले
कला एवं विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर,
गढी ता. गेवराई जि. बीड
email-potkuleh@gmail-com

सार':

संत कबीर दास उत्तर भारत की निर्गुण भक्ति आंदोलन के पुरस्करता ही नहीं वरन शोषित, पीड़ित, दलित जातियों से संबंध्द बहुसंख्यांक समुदाय के प्रतिनिधि थे। कबीर तत्कालीन परिस्थितियों में और आज के परिदृश्य में युग दृष्टा और क्रांतिकारी कवि, विचारक है। आज हम चारो ओर व्याप्त सामाजिक जड़ता और अराजकता को देखते हैं तो इस व्यवस्था के विरुद्ध क्रांति का शंखनाद करने के लिए युगपुरुष संत कबीर के विचारों के महत्व और आवश्यकता को जानते हैं। उन्होंने बाह्याडंबरों, कुरीतियों,जडता—मूढता तथा अंधविश्वासों का तर्कपूर्ण और दृष्टांत लेटर खंडन किया साथ ही मानव— मानव भेद को खारिज करने की बात कही है। वर्तमान समय में भौतिक साधनों हेतु स्वार्थीवृत्ती, भ्रष्टाचार, लूट— खसौट और मिलावटखोरी जैसे अपराध मानवता को झकझोर रहे हैं तब संत कबीरदास के यह विचार चेतना के रूप में सामने आते हैं। आज की भोगवादी संस्कृति स्वकेंद्रित है।इसके पीछे मनुष्य भाग रहा है। वह मनुष्य को आगाह करते हैं कि इस अज्ञानता के विरुद्ध जीवन की भूख रोटी मात्र से नहीं मिलती इसके लिए नैतिक मूल्यों पर आधारित जीवन चाहिए। हमारा संत साहित्य मानवधर्म, अच्छा आचरण, कर्तव्य परायणता का काव्य है। संतवाणी की उपादेयता आज सर्वाधिक है। कबीर के तत्कालीन सामाजिक जीवन के ऱ्हास की चिंता और मानव मूल्य में आई गिरावट को देखते हुए टिप्पणी करना आज के युग में भी चेतना का स्वरूप है।

प्रस्तावना:

संत कबीरदास उत्तर भारत के निर्गुण भक्ति आंदोलन के पुसकरता ही नहीं वरन शोषित, पीड़ित, दलित जातियों से संबंध्द बहुसंख्यांक समुदाय के प्रतिनिधि थे।कबीर तत्कालीन परिस्थितियों में और आज के परिदृ श्य में युगद्रष्टा और क्रांतिकारी कवि, विचारक है। आज हम चारों ओर व्याप्त सामाजिक जड़ता और अराजकता को देखते हैं तो इस व्यवस्था के विरुद्ध क्रांति का शंखनाद करने के लिए युगपुरुष संत कबीर के विचारों के महत्व और आवश्यकता को जानते हैं। उन्होंने बाह्याडंबरों,कुरीतियों,जडता— मूढ़ता तथा अंधविश्वासों का तर्कपूर्ण और दृष्टांत देकर खंडन किया साथ ही मानव —मानव भेद को खारिज करने की बात कही है। वर्तमान समय में भौतिक साधनों हेतु स्वार्थि वृत्ती,भ्रष्टाचार, लूट—खसौट और मिलावटखोरी जैसे अपराध मानवता को झकझोर रहे हैं तब संत कबीरदास के यह विचार चेतना के रूप में हमारे सामने आते हैं।

'आचरण की शुद्धता'

कबीर ने सदाचार को भक्ति के प्रमुख अंगो के रूप में स्वीकार किया है। मानव को सदाचार की प्राप्ति के लिए शुध्द आचरण की आवश्यकता है। कबीर की दृष्टि में मनुष्य को आचरण की शुद्धता के लिए कनक और कामिनी का त्याग के साथ सत्संगति के महत्व को प्रतिपादित किया है। सज्जनों की संगति से ही मानव शुद्धाचरण की ओर प्रवृत्त हो जाता है और इसी से मनुष्य की दुर्मति का विनाश होकर उसे सुमति प्राप्त होती है। कबीर के यह विचार आधुनिक युग में दिशादर्शक है क्योंकि आज मनुष्य कुसंगति,कनक और कामिनी को अधिक अपनाता दिखाई देता है। इसके विपरीत परिणाम आज स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं

साचौ मारें झूठ पढि,काजी करै अकाज।।(†)

काजी मस्जिद में बांग देता है कि खुदा एक है, वही सब में है। वह दूसरे जीव की हत्या करता है तब यह ज्ञान भूल जाता है। काजी कीज़इस कथनी और करनी में अंतर है उस पर कवि व्यंग्य करते हैं। काजी का यह झूठा व्यवहार अज्ञानी की भांति है।

'प्रकृति का संरक्षण':

कबीर दास ने प्रकृति, वनस्पति और प्राणी मात्र की ओर संवेदनशील भाव से देखा है । ६०० वर्ष से भी अधिक समय पहले कबीर जी की वाणी में अनेक प्रसंग, दृष्टांत, उल्लेख मिलते हैं जहां जीव दया से भी आगे बढ़कर जड़– चेतन के साथ अपने को जोड़कर देखने की दृष्टि मिलती है। कबीर ने फूल, पत्ते, फल आदि को ईश्वर का रूप माना है–

पाति ब्रह्मा पुष्पे विष्णु, फूल फल महादेवा।
तीनि देवी एक मूर्ति, करै किसकी सेवा।।(४)

इस दोहे में कबीर जी ने पर्यावरणविद आत्मवत दृष्टिकोण को स्पष्ट किया है। उन्होंने पत्तियों को ब्रह्मा, पुष्पों को विष्णु तथा फल– फूलों को महादेव का स्वरूप माना है। कबीर जी मानव को यह सूचित करते हैं कि फूल– फल और पत्तों को तोड़कर भगवान की मूर्ति पर चढ़ाना पाप है। फूल– पत्तों में व्याप्त भगवान के रूप को मानना चाहिए। इतनी गहरी संवेदनशीलता कबीर की वाणी में है। कबीर की वाणी में दो चिंता के विषय है मनुष्य का मानसिक आत्मिक आयाम याने भीतर पर्यावरण और सांसारिक भौतिक आयाम याने बाहरी पर्यावरण। संत कबीर ने ६०० वर्षों पूर्व पेड़, पत्ते, पौधों में प्राण तत्व के होने की मानव की तरह सांस लेने की अवधारणा को व्यक्त करके उन्हें कष्ट न पहुंचाने की , नष्ट न करने की बात कही है।

कबीर कहते है कि इस कलियुग मे मनुष्य अपने इच्छा के पीछे दौड रहा है ।मनुष्य अनेक इच्छाओं मे फस गया है, बहुतों से आशा करता है और बहुत लोगों को हितैषी मानता है। पर ऐसा व्यक्ती निश्चिंत नहीं है।

कबीर कलिजुग आइ करि, कीये बहुत जु मीत।
जिन दिल बंधी एक सूं, ते सुख सोवै निचींत।।(५)

मनुष्य अपने देह के रंग–रूप, यौवन सौंदर्य पर गर्व करता है जबकि यह क्षनिक है।

कबीर कहा गरबियों, देही देखि सुरंग।
बिछा डिया मिलीबो नहीं, जो कांचली भुवंग (६)

जैसे सर्प केंचुली छोड़ता है तो उसे फिर से प्राप्त नहीं कर सकता। उसी प्रकार मनुष्य का यह सुंदर देह केंचुली की तरह छुटता है। वह शरीर फिर नहीं मिलता । सौंदर्य, रंग– रूप चार दिन देखने योग्य है अंततरू यह राखी ही बन जाता है।वर्तमान समय का जब हम विचार करते हैं तो पाते हैं कि अधिकांश युवा वर्ग इस ओर आकर्षित है। जो नश्वर है उसके पीछे दौड़ रहा है उसे कबीर के दोहे दिशादर्शक है।

आज की भोगवादी संस्कृति स्वकेंद्रित है। इसके पीछे मनुष्य भाग रहा है। कबीर मनुष्य को आगाह करते हैं कि इस अज्ञानता के विरुद्ध जीवन की भूख रोटी मात्रा से नहीं मिटती, इसके लिए नैतिक मूल्यों पर आधारित जीवन चाहिए। हमारा संत साहित्य मानवधर्म, अच्छा आचरण, कर्तव्य परायणता का काव्य है। संतवाणी की उपादेयता आज सर्वाधिक है। कबीर की वाणी में तत्कालीन सामाजिक जीवन के ऱ्हास की चिंता और मानव मूल्य में आई गिरावट को देखते हुए टिप्पणी करना आज के युग में भी चेतना का स्वरूप है।

संदर्भ सूची:–

1. कबीर ग्रंथावली–डॉ. हरिप्रसाद गुप्त,पृ.२३४
2. कबीर ग्रंथावली–डॉ. हरिप्रसाद गुप्त,पृ.२१६
3. कबीर ग्रंथावली–डॉ. हरिप्रसाद गुप्त,पृ.२२६
4. कबीर ग्रंथावली–डॉ. हरिप्रसाद गुप्त,पृ.२१०
5. सात भारतीय संत–डॉ. बलदेव वंशी,पृ.१२
6. कबीर ग्रंथावली–डॉ. हरिप्रसाद गुप्त,पृ.११२
7. कबीर ग्रंथावली–डॉ. हरिप्रसाद गुप्त,पृ.११६